28 जुलाई, 2024

पिन्तेकुस्त के बाद दसवाँ रविवार

परमेश्वर की जीवन देने वाली सामर्थ्य

भजन संहिता अध्याय 43

यहेजकेल अध्याय 47 वचन 1 से लेकर 12 तक

प्रेरितों के काम अध्याय 20 वचन 7 से लेकर 12 तक

मरकुस अध्याय 5 वचन 21 से लेकर 43 तक

सुप्रभात, प्रिय कलीसिया। आज, हम "परमेश्वर की जीवन देने वाली सामर्थ्य" के विषय पर मनन करने के लिए एकत्रित हुए हैं। हमारे विश्वास के जीवन की यात्रा में, जीवन देने वाली परमेश्वर की सामर्थ्य को गहराई को समझना हमारे लिए आवश्यक है। यह सामर्थ्य न केवल हमारे इर्द-गिर्द के संसार में वरन् आत्मिक नयेपन और शाश्वत जीवन में भी स्पष्ट दिखाई देती है, जिसे परमेश्वर हम में से प्रत्येक को प्रदान करता है। पवित्रशास्त्र के आज के पाठ हमें परमेश्वर की जीवन देने वाली सामर्थ्य, जीवन के अर्थ, शाश्वत जीवन और भरपूर जीवन तथा बहुतायत वाले जीवन के ईश-विज्ञान की खोज करने में मार्गदर्शन देंगे। आइए हम परमेश्वर के वचनों पर अपने मनों को लगाएँ और उसकी जीवन देने वाली सामर्थ्य से प्रेरित हों।

1. जीवन के लिए विलाप करना: भजन संहिता अध्याय 43

भजन 43 परमेश्वर के छुटकारे और जीवन देने वाली सामर्थ्य के लिए हृदय से की गई एक पुकार को व्यक्त करता है:

"हे परमेश्वर, मेरा न्याय चुका और विधर्मी जाति से मेरा मुक़द्दमा लड़; मुझ को छली और कुटिल पुरुष से बचा। क्योंकि हे परमेश्वर, तू ही मेरी शरण है, तू ने क्यों मुझे त्याग दिया है? मैं शत्रु के अन्धेर के मारे शोक का पहिरावा पहिने हुए क्यों फिरता रहूँ? अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज; वे मेरी अगुवाई करें, वे ही मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे निवास स्थान में पहुँचाएँ! तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊँगा, उस ईश्वर के पास जो मेरे अति आनन्द का कुंड है; और हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा बजा बजाकर तेरा धन्यवाद करूँगा। हे मेरे प्राण, तू क्यों गिरा जाता है? तू अन्दर ही अन्दर क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि वह मेरे मुख की चमक और मेरा परमेश्वर है; मैं फिर उसका धन्यवाद करूँगा।"

भजनकार की विनती परमेश्वर से प्रकाश पाने और उसकी विश्वासयोग्यता से भरी देखभाल के लिए परमेश्वर की जीवन देने वाली उपस्थिति के लिए एक गहरी तड़प को दिखाती है। ठुकराए जाने और सताए जाने के बावजूद, भजन का लेखक परमेश्वर में आशा रखता है, और उसे ही आनन्द और प्रसन्नता के स्रोत के रूप में स्वीकार करता है। यह अनुच्छेद हमें सिखाता है कि संकट के समय में, हम परमेश्वर को पुकार सकते हैं, अपनी सबसे कठिन परिस्थितियों में जीवन और आशा पाने की उसकी सामर्थ्य पर भरोसा कर सकते हैं। परमेश्वर की जीवन देने वाली सामर्थ्य हमें सहारा देती है, हमें नया बनाती है, और हमें उसकी उपस्थिति की ओर ले जाती है, जहाँ हमें सच्चा आनंद और प्रसन्नता मिलती है।

2. जीवन की नदी: यहेजकेल अध्याय 47 वचन 1 से लेकर 12 तक

अध्याय 47 वचन 1 से लेकर 12 में, भविष्यवद्वक्ता यहेजकेल को मंदिर से बहने वाली एक नदी का दर्शन दिया गया है, जो जहाँ कहीं जाती है, वहाँ जीवन और चँगाई लेकर आती है:

फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया; और भवन की डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूर्व की ओर बह रहा था... जब वह पुरुष हाथ में मापने की डोरी लिए हुए पूर्व की ओर निकला, तब उसने भवन से लेकर, हज़ार हाथ तक उस सोते को मापा, और मुझे जल में से चलाया, और जल टखनों तक था। उसने फिर हज़ार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल घुटनों तक था, फिर और हज़ार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल कमर तक था... तब उसने मुझे से पूछा, “हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा है?” तब उसने मुझे नदी के किनारे–किनारे लौटाकर पहुँचा दिया। लौटकर मैं ने क्या देखा, कि नदी के दोनों तटों पर बहुत से वृक्ष हैं... “यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और अराबा में उतरकर ताल की ओर बहेगा; और यह भवन से निकला हुआ सीधा ताल में मिल जाएगा; और उसका जल मीठा हो जाएगा... और जहाँ कहीं यह नदी पहुँचेगी वहाँ सब जन्तु जीएँगे... नदी के दोनों किनारों पर भाँति भाँति के खाने योग्य फलदायी वृक्ष उपजेंगे, जिनके पत्ते न मुर्झाएँगे और उनका फलना भी कभी बन्द न होगा, क्योंकि नदी का जल पवित्रस्थान से निकला है। उनमें महीने महीने नये नये फल लगेंगे। उनके फल तो खाने के, और पत्ते औषधि के काम आएँगे।"

यह दर्शन परमेश्वर की जीवन देने वाली सामर्थ्य का प्रतीक है, जो उसकी उपस्थिति में से बहती है और परिवर्तन लाती है। नदी मृत सागर के खारे पानी को ताजा कर देती है, जिससे जीवन अंकुरित होता है। यह चित्र हमें सिखाता है कि परमेश्वर की जीवन देने वाली सामर्थ्य को कोई भी बाधा से रोक नहीं सकती है। यह नयेपन, चँगाई और भरपूरी वाले जीवन को लाती है। जिस तरह नदी वृक्षों को पोषित करती है और फल पैदा करती है, उसी तरह हमारे जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति हमें पोषण देती है, जिससे हम फल पैदा कर पाते हैं और दूसरों को चँगाई प्रदान करने में योग्य हो जाते हैं। हमें परमेश्वर की जीवन देने वाली नदी में डुबकी लेने के लिए आमंत्रित किया गया है, जिससे कि उसकी सामर्थ्य हमारे माध्यम से बहे और हमारे जीवन तथा हमारे इर्द-गिर्द के संसार को बदल सके।

3. पुनरुत्थान की सामर्थ्य: प्रेरितों के काम अध्याय 20 वचन 7 से लेकर 12 तक

अध्याय 20 वचन 7 से लेकर 12 में, हम यूतुखुस के जिलाए जाने के माध्यम से परमेश्वर की जीवन देने वाली सामर्थ्य का एक नाटकीय उदाहरण देखते हैं:

"सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें कीं; और आधी रात तक बातें करता रहा। जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उसमें बहुत दीये जल रहे थे। और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था। जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया। परन्तु पौलुस उतरकर उससे लिपट गया, और गले लगाकर कहा, “घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।” और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उनसे बातें करता रहा कि पौ फट गई। फिर वह चला गया। और वे उस जवान को जीवित ले आए और बहुत शान्ति पाई।"

यह कहानी परमेश्वर की जीवन देने वाली सामर्थ्य को स्पर्शनीय और आश्चर्यजनक तरीके से दिखाती है। पौलुस के द्वारा उसे गले लगाना और उसके लिए प्रार्थना करने से, यूतुखुस फिर से जीवित हो जाता है। जिलाए जाने की यह घटना एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है कि परमेश्वर के पास जीवन और मृत्यु पर सामर्थ्य है। यह उस आत्मिक पुनरुत्थान का भी प्रतीक है, जिसे हम यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से अनुभव करते हैं। जब हम पाप में आत्मिक रूप से मरे हुए होते हैं, तो परमेश्वर अपने अनुग्रह और पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा हमें नए जीवन में लाता है। यह नया जीवन केवल अस्तित्व का आगे चलता रहना मात्र नहीं है, वरन् उद्देश्य, आशा और परमेश्वर की उपस्थिति से भरे जीवन में परिवर्तन है।

4. भरपूरी वाला जीवन: मरकुस अध्याय 5 वचन 21 से लेकर 43 तक

मरकुस के सुसमाचार में आपस में जुड़ी हुई दो कहानियाँ मिलती हैं, जो यीशु के द्वारा जीवन देने वाली सामर्थ्य को उजागर करती हैं। सबसे पहले, आराधनालय का सरदार, याईर, यीशु से अपनी मरते हुई पुत्री को चँगा करने की विनती करता है:

"वह झील के किनारे ही था कि याईर नामक आराधनालय के सरदारों में से एक आया, और उसे देखकर उसके पाँवों पर गिरा, और यह कहकर उससे बहुत विनती की, “मेरी छोटी बेटी मरने पर है : तू आकर उस पर हाथ रख कि वह चंगी होकर जीवित रहे।”

याईर के घर जाने वाले मार्ग में, एक बारह वर्षों से लहू बहने वाली पीड़ित महिला, यीशु के वस्त्र को यह विश्वास करते हुए छू लेती है कि वह चँगी हो जाएगी:

"तुरन्त उसका लहू बहना बन्द हो गया, और उसने अपनी देह में जान लिया कि मैं उस बीमारी से अच्छी हो गई हूँ...यीशु ने भीड़ में पीछे फिरकर पूछा, “मेरा वस्त्र किसने छुआ?”... तब वह स्त्री यह जानकर कि मेरी कैसी भलाई हुई है, डरती और काँपती हुई आई, और उसके पाँवों पर गिरकर उससे सब हाल सच–सच कह दिया। उसने उससे कहा, “पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है : कुशल से जा, और अपनी इस बीमारी से बची रह।”

इसी बीच, यह समाचार आता है कि याईर की पुत्री मर गई है। यीशु उसे आश्वासन देता है कि:

"'मत डर; केवल विश्वास रख'... और लड़की का हाथ पकड़कर उससे कहा, “तलीता कूमी!” जिसका अर्थ है, “हे लड़की, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ !” और लड़की तुरन्त उठकर चलने फिरने लगी।"

ये आश्चर्यकर्म बीमारी और मृत्यु पर यीशु के अधिकार को दिखाते हैं, उसकी जीवन देने वाली सामर्थ्य को दिखाते हैं। वे भरपूरी वाली जीवन के विचार को भी दिखाते हैं। उस स्त्री का चँगा होना और उस लड़की का जिलाया जाना, यीशु द्वारा दिए जाने वाले जीवन की परिपूर्णता की अभिव्यक्तियाँ हैं। भरपूरी वाला जीवन, जैसा कि यूहन्ना अध्याय 10 वचन 10 में बताया गया है, ऐसा जीवन है, जो परमेश्वर की उपस्थिति और आशीषों से भरा हुआ है। यह केवल शारीरिक स्वास्थ्य या भौतिक समृद्धि के बारे में ही नहीं है, बल्कि इसमें आत्मिक कल्याण, शांति, आनंद और उद्देश्य शामिल हैं।

मसीही ईश-विज्ञान में भरपूरी वाली जीवन एक केंद्रीय विषय है। यह वह जीवन है, जिसे यीशु ने उन लोगों को देने का वादा किया था, जो उसके पीछे हो लेते हैं। इस जीवन की विशेषता परमेश्वर के साथ एक गहरे, स्थायी संबंध, पवित्र आत्मा का निवासस्थान होने और परमेश्वर के प्रेम, अनुग्रह और सामर्थ्य का अनुभव करना है। भरपूरी वाला जीवन चुनौतियों या दु:खों से अलग नहीं है, परन्तु यह परमेश्वर की उपस्थिति के आश्वासन और अनंत जीवन की आशा से चिह्नित है।

यूहन्ना अध्याय 15 वचन 5 में, यीशु कहता हैं कि:

"मैं दाखलता हूँ : तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।"

यह वचन भरपूरी वाले जीवन के सार को अपने में समेटे हुए है - अर्थात् जीवन के स्रोत यीशु से जुड़े रहना और उसकी जीवन देने वाली सामर्थ्य के द्वारा फल पैदा करना। भरपूरी वाले जीवन का ईश-विज्ञान हमें परमेश्वर के साथ घनिष्ठता से भरी संगति में रहने, उसके प्रावधान और मार्गदर्शन पर भरोसा करने और दूसरों के प्रति उसके प्रेम और अनुग्रह को दिखाने के लिए बुलाहट देता है। यूहन्ना रचित सुसमाचार में, जीवन, भरपूर जीवन और अनन्त जीवन के विचार केन्द्रीय विषय के रूप में दिखाई देते हैं, जो यीशु के मिशन और संदेश को गहराई से प्रकट करते हैं।

जीवन: यूहन्ना अध्याय 1 वचन 4 में लिखा है, "उसमें जीवन था और वह जीवन मनुष्यों की ज्योति था।" यीशु को शारीरिक और आत्मिक दोनों तरह के सारे जीवन के स्रोत के रूप में चित्रित किया गया है। उसका जीवन वह ज्योति है, जो मनुष्य का मार्गदर्शन करती और उसे ज्ञान प्रदान करती है, तथा जीवन जीने का एक नया तरीका प्रदान करती है।

भरपूर जीवन: यूहन्ना अध्याय 10 वचन 10 में, यीशु ने घोषणा की, "मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ।" भरपूरी वाला यह जीवन मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ एक गहरे, सार्थक संबंध की विशेषता है। यह मात्र एक व्यक्ति के अस्तित्व में रहने से परे है और इसमें आत्मिक समृद्धि, आनंद, शांति और उद्देश्य शामिल हैं। भरपूर जीवन का अर्थ है, परमेश्वर का अनुग्रह और उसके प्रेम की पूर्णता में जीना, प्रतिदिन उसकी आशीष और उपस्थिति का अनुभव करना।

अनन्त जीवन: यूहन्ना अध्याय 3 वचन 16 में साफ-साफ कहा गया है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" अनन्त जीवन परमेश्वर के साथ अनन्त संगति का वादा है, जो अभी से आरम्भ होकर शारीरिक मृत्यु के बाद भी चलती रहेगा। यह उन लोगों को दिया जाने वाला उपहार है, जो यीशु में विश्वास करते हैं, जिसे वह परमेश्वर के साथ भविष्य की आशा और आश्वासन को प्रदान करता है।

ये विषय यीशु के जीवन और शिक्षाओं की परिवर्तन लाने वाली सामर्थ्य को उजागर करते हैं, तथा विश्वासियों को परमेश्वर के साथ एक गहराई से, जीवन देने वाले संबंध में आने के लिए आमंत्रित करते हैं।

निष्कर्ष

प्रियों, जब हम इन वचनों पर मनन करते हैं, तो हमें एक स्पष्ट संदेश मिलता है: परमेश्वर की जीवन देने वाली सामर्थ्य विशाल, सभी के लिए उपलब्ध और परिवर्तन लेने वाली है। यह हमें संकट के समय में संभालती है, अपनी उपस्थिति के द्वारा हमें नया बनाती है, शारीरिक और आत्मिक पुनरुत्थान को लाती है, और हमें मसीह में भरपूर जीवन प्रदान करती है। आइए हम इस जीवन देने वाली सामर्थ्य को अपना बना लें, इसे अपने माध्यम से बहाने दें और हमारे जीवन और हमारे इर्द-गिर्द के संसार को बदलने दें।

प्रार्थना

हे स्वर्गीय पिता, हम आपकी जीवन देने वाली सामर्थ्य के लिए आपका धन्यवाद करते हैं, जो हमें थामे रखती है, हमें नया करती है और बदल देती है। हमें उस भरपूर जीवन को समझने और अपनाने में मदद करें, जिसे आप अपने पुत्र, यीशु मसीह के द्वारा प्रदान करते हैं। हमें अपने पवित्र आत्मा से भरें, ताकि हम आपके साथ घनिष्ठ संगति में रह सकें, फल पैदा कर सकें और दूसरों के साथ आपके प्रेम को साझा कर सकें। हे प्रभु, हम उन लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं, जिन्हें आज आपके जीवन देने वाले स्पर्श की आवश्यकता है। अपनी उपस्थिति से उन्हें तसल्ली दें और उन्हें चँगाई और शांति प्रदान कर। हमारे विश्वास को मजबूत कर और हमें आपके प्रावधान और मार्गदर्शन पर भरोसा रखने में मदद करें। हम इस प्रार्थना को हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के नाम से माँगते हैं। आमीन।।

रविवारिये उपदेश - द रेव्ह. डॉ. डी. जे. अजित कुमार, जनरल सेक्रेटरी, सी. एन. आई, सिनड

(हिंदी अनुवाद - द रेव्ह. जितेन्द्र जीत सिंह - करनाल, हरियाणा)